प्रकाशन की तिथि 01.5.2015

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

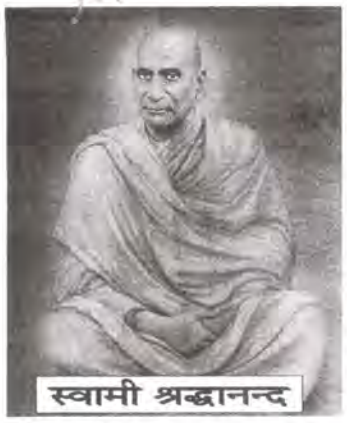
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 38 अंक 05

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 300 रुपये

मई 2015 विक्रम सम्वत् 2072 वैशाख-ज्येष्ठ

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011–23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

जय माँ भारती

लेखक – ब्रह्मदेव भाटिया

ब्रह्माण्ड का अनन्त विस्तार–दिव्यता का अनुपम अनिर्वचनीय रूप–एक आकार जो असीम है– एक असीम विस्तार जो सीमाओं की हर परिधि से मुक्त है– यदि ब्रह्माण्ड की परिकल्पना असीम आकार के रूप में की जाए तो वह साकार है, यदि ब्रह्माण्ड की परिकल्पना एक ऐसे विस्तार के रूप में की जाए जिसकी कोई सीमा नहीं है तो वह निराकार है। ब्रह्माण्ड दिव्यता के साकार तथा निराकार ब्रह्म दोनो के ज्ञान की अनुभूति हमे प्रदान करता है। ब्रह्माण्ड के अनन्त विस्तार में असंख्य सौर परिवार एक दूसरे से अनन्त दूरियों पर छिटके पड़े हैं। इन सौर परिवारों में एक सौर परिवार हमारा भी है। हमारे सौर परिवार में एक सूर्य है जिस के चारों ओर नौ ग्रह, नियमित गति से, अपनी अपनी कक्षा में, परिक्रमा कर रहे हैं।

भारतवासियों को अनन्त काल से सौर परिवार की गतिविधियों का ज्ञान था । वह सौर परिवार की गतिविधियों का हर वर्ष पंचांग बनाते थे। इस के आधार पर तीज, त्योहारों की तिथियों, परिवारिक आयोजनों की शुभ घड़ियों, शुभ दिनों का निर्धारण करते थे। पंचांग के आधार पर उन्होंने ज्योतिषविद्या का विकास किया। अनन्त काल से ग्रहों का ज्ञान भारत की सामाजिक संस्कृति का भाग बना रहा है।

आधुनिक युग के सौर वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड के रहस्यों को उजागर करने के प्रयासों में बड़ी व्यग्रता से लगे हुए हैं। अनेक देशों ने चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों तक अनेक अन्तरिक्षयान तथा वैज्ञानिक उपकरण भेजे हैं। एक अन्तरिक्षयान मनुष्य को चन्द्रमा पर उतार कर उसे वापस पृथ्वी पर ला चुका है। अमरीका का एक अन्तरिक्षयान, हबल नाम का विशाल टैलीस्कोप लेकर वर्षों से अज्ञात अन्तरिक्ष में निरन्तर आगे बढ़ते हुए अज्ञात अन्तरिक्ष की सूचनाएँ भेज रहा है। भारत वर्ष ने भी चन्द्रयान तथा मंगलयान नाम के दो यान चन्द्रमा तथा मंगलग्रह तक भेजे हैं। इतने विशाल तथा व्यग्र प्रयासों के पश्चात् भी मनुष्य का अन्तरिक्ष सम्बन्धी ज्ञान नगण्य है। मनुष्य अपने ग्रह के बाहर अन्तरिक्ष में अभी तक जीवन के संकेत कहीं भी प्राप्त नहीं कर सका है।

अब तक के ज्ञात ग्रहों में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है। पृथ्वी को अपने ऊपर जैव जगत (बनस्पतियां तथा जीव) की सृष्टि रचने की क्षमता विकसित करने के लिए युगों तक अथाह विप्लवी उत्पीड़न को झेलना पड़ा है। पृथ्वी प्रारम्भ में नितान्त तप्त ऊंची उछालें मारते उबलते पदार्थ के रूप में थी। काल की दीर्घ अवधि के पश्चात् पृथ्वी कुछ ठण्डी होकर लाल तप्त गोले में बदल गई। पृथ्वी की तप्त काया मे से जल वाष्प तथा गैसें बाहर आईं इन गैसों तथा वाष्प ने पृथ्वी को, चारों ओर से दूर ऊचाई तक, ढक लिया। जलवाष्प ऊपर जाकर ठण्डा होकर तप्त पृथ्वी पर जल के रूप में बरसता तथा तुरन्त वाष्प बन वापस उड़ जाता। युगों तक इस प्रक्रिया के चलते रहने के पश्चात पृथ्वी का ऊपरी तल ठण्डा हो कर ठोस होने लगा। यह ठोस तल मोटा होते होते पृथ्वी की भूमि बन गया। पृथ्वी का शेष तप्त तरल पदार्थ भूमि के भीतर दब गया। बरसात जल भूमि पर अनेक जल राशियों के रूप में एकत्र होते हुए महासागरों का रूप ले गया। पृथ्वी के चारों ओर की गैसो ने वायु मण्डल का रूप लिया। पृथ्वी पर भूमण्डल, जल मण्डल, वायुमण्डल ने रूप ले लिया था। वायु मण्डल में, प्रारम्भ में, कार्बन–डाई–आक्साईड तथा नाईट्रोजन नाम की दो गैसें थीं। जीवन दायिनी आक्सीजन नहीं थी। फिर भी जल में पहले नाईट्रोजन पर निर्भर क्षुद्रक्षीण जीव प्रकट होने लगे। कुछ समय पश्चात् क्षीण जलीय बनस्पतियां प्रकट होने लगीं। बनस्पतियों ने कार्बन– डाई–आक्साईड से कार्बन को अवशोषित कर आक्सीजन को युक्त करना शुरु किया। यह प्रक्रिया तीव्र थी। वायु मण्डल में आक्सीजन की मात्रा तीव्रता से बढ़ने लगी। पृथ्वी का सम्पूर्ण पर्यावरण जैव जगत के विकास के लिए सक्षम हो गया था। पृथ्वी पर आक्सीजन निर्भर अधिक बड़े तथा सक्षम जीव प्रकट होने लगे थे। विकास के क्रम का भाग बन बनस्पतियों के भी अधिक सशक्त रूप प्रकट होने लगे। जैव जगत आगे बढ़ते हुए सम्पूर्ण पृथ्वी पर विकास पा गया। जीवों के कुछ रूपों में आकाश में उड़ने की क्षमता का भी विकास हुआ। वह पक्षियों के रूप में गगनचारी बने। जल, थल तथा व्योम में जैव जगत ने विस्तार किया। हमारा ग्रह एक जीवन्त ग्रह का रूप प्राप्त किया।

भूमि पर भीतर से तप्त तरल पदार्थ बाहर की ओर बल लगा रहा था। भूमि के ऊपर सूर्य का धरता बढ़ता ताप, वायु प्रवाह तथा बहता जल सक्रिय थे। भूमि भीतर का बल तथा बाहर की सक्रियता झेलते हुए कई रूपों को जन्म दे रही थी तथा कई रूप नष्ट हो रहे थे। भूमि पर पर्वत, पठार, घाटियां, मैदान बन बिगड़ रहे थे। जीव तथा बनस्पतियां बदलते पर्यावरण से ताल मेल बिठाने के लिए नए नए रूपों में विकसित हो रहे थे। प्रकृति का सम्पूर्ण स्वरूप जीव निर्जीव का हर रूप शेष प्रकृति संग अनुकूलता तथा अन्तर्निर्भरता की अवस्था को प्राप्त करने के लिए युगों तक सक्रिय रहा। अन्ततः हमारे ग्रह पृथ्वी पर प्रकृति के हर रूप में अन्तरसम्बन्ध तथा अन्तरनिर्भरता का वातावरण स्थापित हुआ। इस के पश्चात् जीवों के विकास का एक दीर्घ कालीन क्रम चला। जीवों के विकास के क्रम में जो जीव, अद्भुत क्षमताओं से सम्पन्न होकर, विकास के सर्वोच्च स्थान पर पहुचां वह "मानव" है।

प्रकृति का सकल स्वरूप विराट ब्रह्म की अनुपम रचना है। परमात्मा की यह अनुपम रचना परमात्मा का सर्व सुन्दर, सर्व सम्पूर्ण तथा सर्व सम्पन्न लेख है। मनुष्य इस रचना का एक अनूठा अंश है। मनुष्य अनन्य शरीरिक, बौद्धिक, मानसिक, संवेदना एवं अनुभूति की क्षमताओं से सम्पन्न जीव है। प्रकृति ने अपने इस अंश को इतनी अदभुत क्षमताओं से सम्पन्न निश्चय ही इस उद्देश्य से किया है कि वह सम्पूर्ण प्रकृति संग स्नेह सत्कार के सम्बन्ध स्थापित करे। प्रकृति को अनुभूत कर प्रकृति के विराट रचनाकार का आभास पाप्त तथा प्रकृति परमात्मा तथा अपने मनुष्य होने के महत्व को संसार में स्थापित करे।

हमारे ग्रह का सब से ऊंचा पर्वत हिमालय है। यह सागर के तल के निरन्तर ऊपर उठने से बना प्रकृति का एक अनूठा आकार है। यह कम आयु के पर्वतों में एक है। इस की चट्टानों की मिट्टी ढीली हैं। इस की उच्च श्रेणियां तथा शिखर सदा हिम से ढके रहते हैं। इस हिम के पिघलने से जल की अनेकों धाराएं हिमालय की दक्षिणी ढलानों से मिट्टिले कर, नीचे आती हैं। युगों से, इन धाराओं की मिट्टी से, हिमालय के दक्षिण में एक विशाल मैदान की रचना हुई है। दक्षिणी ध्रुव की भूमि अन्टार्कटिका से एक त्रिभुजाकार भूखण्ड आकर इस मैदान से सट कर जुड़ गया है। इस प्रकार हिमालय के दक्षिण में स्थित विशाल

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भूप्रदेश हिमालय की मिट्टी तथा दक्षिण ध्रुव प्रदेश से आए भूखण्ड के जुड़ने से बना है।

एशिया महाद्वीप के दक्षिण में – हिमालय पर्वत, उस के दक्षिण का विशाल भूप्रदेश, उस पर बहती सरिताएं, दक्षिण के महासागरों के प्रभाव, सुखद सहयोगी ऋतु चक्र, यहां के बन बनस्पतियां जीव मिल कर जैव जगत के विकास तथा मानव सस्कृति की सृष्टि के लिए अनूठे प्राकृतिक एक्य की रचना करते हैं। यहां मनुष्य को प्रकृति संग स्नेह सत्कार द्वारा अपनी संस्कृति को विकसित करता देख स्वयं विधाता मानव समाज का अंग बन अवतरित होते रहे हैं।

मनुष्य ने यहां के प्राकृतिक परिवेश में भांति भांति की ध्वनियों, वेलियों वाणियों, स्वरों को सुना। उन से आकृष्ट हुआ। उन में अनेक भावों को अनुभूत किया। उस ने भी अपने कंठ, होंठों, जिह्वा को सक्रिय कर कुछ भाव पूर्ण स्वर या वाणी उत्पन्न करने का प्रयास किया होगा। उस के मुख से अनायास कोई शब्द उच्चरित हो गया होगा। उस ने अपने को अभिव्यक्त करने के प्रयास में शब्दों की रचना शुरु किया होगा। शब्दों के संयोजन से वाक्य, वाक्यों के संयोजन से बोली तथा बोली के परिमार्जन से भाषा ने विकास पाया होगा। हिमालय के दक्षिण में अनेकों बोलियां तथा भाषाएं पाई जाती हैं। जो भाषा शब्द भण्डार में सर्वाधिक समृद्ध, रचना व्यवस्था में मर्यादित तथा अभिव्यक्ति की सामर्थ में परिमार्जित होकर प्रचलित हुई वह "संस्कृत" है। संस्कृत भाषा का उदय प्रकृति के सांस्कृतिक विकास का पहला चरण है। संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषा है। संस्कृत भाषा अनेक भाषाओं की जननी है। संस्कृत ***भाषा को देव–भाषा का मान प्राप्त है।***

संस्कृत भाषा के विकास काल में मनुष्य खुले प्राकृतिक वातावरण में निवास करता था। उसका जीवन प्रकृति संग स्नेह सत्कार के सम्बन्धों पर निर्भर था। इन सम्बन्धों द्वारा उसने ज्ञान के प्रचुर भण्डार को संचित कर लिया था। ज्ञानी जन, पृथ्वी से आकाश तक, प्रकृति में घटित हर विकास हर परिवर्तन का अध्ययन मनन करते थे। अर्जित ज्ञान पर मनन करते थे। संचित ज्ञान को ऋचाओं का रूप प्रदान कर सहज स्मरणीय, सहज वचनीय तथा सहज बोधगम्य रूप प्रदान करते थे।

ऋषियों ने, मनुष्य के प्रकृति संग स्नेह सत्कार के सम्बन्धों को, अपनी ऋचाओं में अत्यन्त मार्मिक अभिव्यक्ति दी है।

रात्रिमातरूषसे नः परिदेहि, ऊषानो अन्हे परिददातु अहिंसतुभ्यं विभावरी।।

अर्थ – हे रात्रि माता, हे विभावरी, दिन के परिश्रम (अथर्व 11. 46.2) से थके हारे हमें अपनी गोद में सुला कर प्रभात वेला में हमें माता ऊषा की गोद में दे देना, ऊषा माता पुनः हमें सूर्य के वेग गामी रथ में बिठा देगी और दिन की थकान के बाद सूर्य हमें पुनः तेरी गोद में विश्राम करने के लिए सुला देगा।

मनुष्य के प्रकृति संग स्नेह सत्कार के सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाने के लिए परोपकार के प्रथम धर्म का दृष्टान्त भी मनुष्य ने प्रकृति से पाया। जिस को ऋषियों ने एक ऋचा में इस प्रकार अभित्यक्त किया।

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यपि परार्थाय वृक्षः सत्पुरुषा इव।। (विक्रमचरित 65)

अर्थ– वृक्ष तो सज्जनों जैसे परोपकारी हैं। स्वयं धूप में खड़े रहते हुए भी वे दूसरों को छाया देते हैं। उनके फल भी दूसरों के उपयोग के लिए होते हैं।

समाज पर ज्ञान के विकास का प्रभाव प्रकट होने लगा या विद्वत जन खुले वातावरण तथा बनों में आश्रम बना कर निवास करते थे। उन्हें ऋषि कहा जाने लगा था। उनकी ख्याति दूर तक पहुंच जाती थी। उनसे ज्ञान प्राप्त करने अनेक लोग आते थे। कुछ विद्यार्थी आश्रमवासी बन जाते थे। वह ज्ञानर्जन के साथ आश्रम के अनेक कार्य करते थे।

एक दिन एक ऋषि एक बन में भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने एक बालक को एक बाघ संग बड़े सहज भाव से खेलते देखा। वह बालक को एक टक देखते रहे। कुछ समय पश्चात् बाघ थक कर लेट गया। बालक बाघ पर बड़े सहज भाव से चढ़ कर बैठ गया। ऋषि को इस दृश्य ने चकित किया। ऋषि बालक के पास गया। पूछा, तुम्हें बाघ से डर नहीं लगता। नहीं बन के सभी पशु मेरे मित्र हैं, जो भी पशु इधर आते हैं मैं उन के संग खेलता हूँ। ऋषि और भी चकित हुआ। ऋषि ने बालक का परिचय जानना चाहा। बालक ने बताया! मेरा नाम भरत हैं। मेरी मां का नाम शकुन्तला है। मैं पास ही ऋषि कण्व के आश्रम में रहता हूँ। ऋषि ने सोचा! जो बालक इस अल्प आयु में बन के पशुओं संग इतने सहचर के सम्बन्ध स्थापित कर सकता है तो वह बड़ा होकर सम्पूर्ण प्रकृति संग कितने स्नेह सत्कार के सम्बन्ध स्थापित करेगा तथा इस सम्पूर्ण प्रदेश में ज्ञान का कितना विकास करेगा? इस विचार ने ऋषि के हृदय को गद गद कर दिया। ऋषि ने बालक भरत के नाम पर हिमालय सहित सम्पूर्ण प्रदेश का नाम करण "भारत वर्ष" कर दिया।

भारतवर्ष किसी सम्राट द्वारा स्थापित राज्य या किसी विजेता द्वारा विजित प्रदेश का नाम नहीं है। यह तो प्रकृति के विकास तथा प्रकृति के विकास का अंग बन कर विकसित हुई संस्कृति के विकास के एक चरण का नाम है। भारतवर्ष प्रकृति के युगों के परिश्रम की एक उपलब्धि का नाम है।

भारतवर्ष के विशाल आकार में प्राकृतिक पर्यावरण के नाना रूप हैं। प्रकृति के इन नाना रूपों में एक अन्तर्निर्भरता है। प्रकृति के इन नाना रूपों ने भारतीय समाज को बहुरंगिता प्रदान की है। भारत वर्ष में सामाजिक बहुरंगिता होते हुए भी इस में बड़ी सबल एक सूत्रता है। भारत के पूरब के राज्य मनिपुर का नृत्य मनीपुरी तथा पश्चिम के राज्य राजस्थान का नृत्य रास है परन्तु दोनों में आख्यान भगवान कृष्ण का होता है। ऋषि बाल्मीकि द्वारा संस्कृत में रचित रामायण का अनुवाद हर प्रदेश की भाषा में उस प्रदेश के ही किसी विद्वान द्वारा किया गया है। संस्कृत भाषा को देश के हर भाग में आदर से देखा जाता है। भारत में बाहर के प्रदेशों के लोग प्रायः आकर बसते रहे। वह सदा भारतीय समाज के किसी न किसी रंग में घुल मिल जाते रहे हैं।

भारत का प्राकृतिक पर्यावरण तथा संस्कृति भारत के लोगों को सुखद तथा गरिमामय जीवन निर्वाह की स्थिति तथा मर्यादाएं प्रदान करते हैं। मनुष्य ने यहां की प्रकृति संग, चिर अतीत में, स्नेह सत्कार के सम्बन्ध स्थापित कर लिए थे। यह सम्बन्ध उसके जीवन निर्वाह की परम्परा बने। इन सम्बन्धों ने मनुष्य को मानवीय भावना, चिन्तन तथा परस्पर संवाद की परम्परा एवं ज्ञान के विपुल कोष से सम्पन्न किया। यहां ऋषियों ने–आध्यात्म, योग, आयुर्वेद, रसायन, खगोलविद्या, गणित, दर्शन ज्योतिष, स्वर, संगीत, भाव, मुद्रा, नृत्य, आदि विद्याओं आदि अनेक क्षेत्रों के ज्ञान का विकास किया। इन ज्ञान को विद्यार्थी श्रवण वाचन द्वारा ग्रहण करते थे। इसी कारण इसे श्रुति भी कहा जाता है। लिपि के विकास के पश्चात ज्ञान के इस विशाल कोष को महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास ने चार वेदों के रूप में संग्रहीत किया तथा इस ज्ञान को वैदिक ज्ञान कहा गया।

वर्तमान युग में वैदिक ज्ञान को जन जन में उजागर करने का महत कार्य वैदिक ज्ञान के तीन साधक विद्वानों ने किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ परमहंस वैदिक ज्ञान के विषय में स्वामी दयानन्द सरस्वती का विचार था, " वैदिक ज्ञान सब सत्य विद्याओं का ज्ञान है।" स्वामी विवेकानन्द का कहना था, "वैदिक ज्ञान संसार में, गुरुत्वाकर्षण की भांति, तब भी व्याप्त था जब मनुष्य को इस का ज्ञान नहीं था तथा यह संसार में तब भी रहेगा जब कभी मनुष्य इसे भूल भी गया तो।" स्वामी रामतीर्थ परमहंस ने कहा, "मेरे धर्म का कोई नाम नहीं है, सम्पूर्ण प्रकृति मेरा धर्म है, यह सारी मानवता का धर्म है।"

पृथ्वी का जीवन परमदग्ध तरल पदार्थ के रूप में प्रारम्भ हुआ। युगों पश्चात यह शीतल शान्त होकर यह प्रकृति के जीव निर्जीव रूपों का सुखद पालना बन गई। मानव, पृथ्वी पर प्रकृति का, सर्व विकसित जैव रूप है। मनुष्य ने हिमालय के दक्षिण में प्रकृति संग स्नेह सत्कार के परम सम्बन्ध स्थापित किए। एक ऋषि ने भारत नाम के एक बालक के इन्हीं सम्बन्धों में प्रदेश के भावी गौरव की आशा करते हुए प्रदेश का नाम करण भारतवर्ष कर दिया। प्रकृति संग सत्वपूर्ण सम्बन्धों द्वारा मनुष्य ने अतुल ज्ञान का संचय किया। ऋषि कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास ने इस ज्ञान को वेदों के रूप में संग्रहीत किया। अब प्रकृति के आंगन में खड़ा मानव, ब्रह्माण्ड के रचनाकार, संग, मिलन की कामना लिए हाथों में वेदों को लाये हुए हैं। भूमि संग स्नेह सत्कार के सम्बन्धों को वेदों की एक ऋचा में ऋषियों ने मार्मिक अभिव्यक्ति दी है।

माता भूमिःपुत्रोऽहं पृथिव्याः।।
(अ.12.1.12)

अर्थ– भूमि मेरी माता है और मैं इस मातृभूमि का पुत्र हूँ। ऋषिगण मातृभूमि के विस्तार, सामर्थ, साधनों का सम्मान के भाव से वृतांत देते हुए उस से निवेदन करते हैं कि जीवन के लिए उत्कृष्ट साधन प्रदान करती रहे।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापोयस्यामन्नं कृष्टयःसंबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु।। (अ.12.1.3)

अर्थ– जिस भूमि के साथ समुद्र है, महां सागर है, जिस भूमि में नदियां और जल के झरने हैं जिस भूमि में अनेक प्रकार का अन्न उत्पन्न होता है, जिस में कृषि करने वाली प्रजा मिलकर रहती हैं तथा जिस भूमि पर प्राणी जगत घूमता फिरता है वह हमारी मातृ भूमि हमें अपूर्व, परिपूर्ण खाद्य, पेय

हमे भरपूर देती रहे। ऋषिगण, मातृभूमि, जिस पर अनेकानेक बनस्पतिया हैं, उसका संरक्षण करने तथा यश ज्ञान का संकल्प लेते हैं

यस्यां वृक्षा बानस्पत्यां धुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा।
पृथिवीं विश्वधायसं
धृतामच्छावदामसि। (अ.12.1.29)

अर्थ – हमारी जिस मातृभूमि में वनस्पतियां तथा वृक्ष सदा खड़े रहते हैं उन सब को धारण करने वाली अपनी मातृभूमि को हम संरक्षित रखते हैं तथा मुख्य रूप से उस का ही गुणगान करते हैं। ऋषिगण भारत माता पर नियत क्रम से आने वाली ऋतुओं क सुखद होने की कामना करते हैं।

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः।
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवी नो दुह्यताम्।। (अ.12.13.6)

अर्थ – हे मातृभूमे! वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हेमन्त, और शिशिर ये छः ऋतुएं जो तेरे ऊपर नियत समय से आती हैं और जो वर्ष भर के क्रमपूर्वक मेरे ऊपर दिन और राति आते हैं सब हमे सुख देते रहें।

ऋषिगण मातृभूमि के प्रति समर्पण संकल्प इस प्रकार करते हैं

उपस्थास्ते अनमीबा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवी प्रसूतः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमानावयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।। (अ.12.1.62)

अर्थ– हे मातृभूमि। तुम से उत्पन्न हुए हम सब लोग रोग रहित तथा क्षयादि से दोषरहित होकर तुम्हारी सेवा करने के लिए तुम्हारे समीप रहेंगे। तुम से उत्पन्न हुए भोग हमें प्राप्त हों, हम ज्ञानी बने, दीर्घायु बने और तुम्हारे यश को बढ़ाने के लिए अपने सर्वस्व को अर्पण करने के लिए सन्नद्ध हो। ऋषिगण मात्रिभूमि का यशगान रक्षण तथा आततताइयों से मुक्त करने की कामना करते हैं।

यद्धदामि मधुमद्वदामि यदीक्षे तद्वदान्ति मा।
त्विमीमानस्मि जूति मानवान्यान्हन्मि दोघतः।। (अ.12.1.58)

अर्थ– मातृभूमि के विषय में मैं जो बोलूंगा वह मधुर होगा। जो देखूंगा वह मातृभूमि के रक्षण के लिए होगा। मैं तेजस्वी, वेगवान, बलवान होकर आततताइयों का नाश करुंगा।

ऋषिगण मातृभूमि से अनेक धर्मों का पालन करने वालों, अनेक भाषाओं को बोलने वालों के लिए सभी साधन प्रदान करने की कामना करते हैं।

जनं विभ्रति बहुधा विवाचसंनाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्त्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवैव धेनुरनपस्फुरन्ति।।

अर्थ– अनेक प्रकार की विभिन्न भाषाएं बोलने वाले और अनेक धर्मों को धारण करने वाले जन समुदायों को एक घर में रहने वाले भाइयों के समान यह मातृभूमि धारण करती है। यह मातृभूमि हमें धन की हज़ारों धाराएं ऐसे देती रहे जैसे दुहने के समय न हिलने वाली गौ दूध देती है। हिमालय पर्वत से कन्याकुमारी तक प्रकृति ने एक अदभुत विशाल भूप्रदेश की रचना की है। इस भूप्रदेश के बृहद विस्तार में बहुरंगी प्राकृतिक परिवेश विकसित हुआ है। यहां मनुष्य ने आदि काल से इस प्राकृतिक परिवेश संग स्नेह सत्कार के सम्बन्धों का निर्वाह किया है। एक ऋषि ने भरत नाम के एक नन्हें बालक को प्रकृति संग स्नेह सत्कार के सम्बन्धों को निभाते देखा। ऋषि ने बालक भरत के नाम पर इस सम्पूर्ण प्रदेश का नाम भारतवर्ष रख दिया। सम्बन्धों की इस मर्यादा ने मनुष्य को भूमि से लेकर भूमि के ऊपर के ऋतु चक्र तथा दूर आकाश के ग्रहों तक का ज्ञान प्रदान किया। मनुष्य ने यहां समृद्ध संस्कृति का विकास किया जिस का मुख्य लक्षण इस संस्कृति की बहुरंगिता है। प्रकृति संग स्नेह सत्कार के सम्बन्धों द्वारा मनुष्य ने विशाल ज्ञान कोश का संचय किया। ऋषि कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास ने इस विशाल ज्ञान भण्डार को वेदों के रूप में संग्रहीत किया। संसार को वैदिक ज्ञान के रूप में, संसार में हर युग में व्याप्त रहने वाला ज्ञान अथवा सत्य विद्याओं का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ। भारतवर्ष में विधाता ने प्रकृति संग मनुष्य के सम्बन्धों में माता शिशु के सम्बन्धों की अन्तरानुभूति को अनुभाव किया। इन सम्बन्धों से गद गद होकर स्वयं विधाता मानव समाज का अन्तरंग भाग बन कर भारत में अवतरित होते रहे। वह किसी के पुत्र किसी के भ्राता तो किसी के सहपाठी बने। देवकी नन्दन, वासुदेव पुत्र भगवान कृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से संसार को गीता का ज्ञान प्रदान किया ऋषियों संग जन-जन के कंठ से प्रतिध्वनित हुआ।

भारत माता की जय।

जय मां भारती।

तस्यं हिरण्यवक्ष से पृथिव्या अकरं नमः।। (अ.12.1.26)

अर्थ – जिस भूमि के भीतर सुवर्ण आदि प्रशस्त धातुएं विद्यमान हैं मैं उस मातृभूमि का वन्दन करता हूँ।। (पृथिव्याः अकरं नमः।। यह मन्त्र भाग "वन्दे मातरं" कहने के समान है।

– ऐ 4/443 पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-63

अपील

आर्य समाज मन्दिर की गतिविधियों का विस्तार करने के लिए एक भव्य भवन का निर्माण करने की योजना तैयार है। उदारमना दान दाताओं से विनम्र निवेदन है कि वे यथायोग्य अपना योग प्रदान कर इस पुनीत कार्य को सफल बनाने में हमारी सहायता करें।

– स्वतन्त्रलता शर्मा,
आर्य समाज इन्द्रानगर, बंगलौर

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) का 92वाँ जन्मदिवस समारोह उत्साहपूर्वक संपन्न

आर्य जगत् के दानवीर, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, वेद के प्रचार के लिए अहर्निश प्रयत्न करने वाले महाशय धर्मपाल जी ने एक विशाल समारोह में अपना 92वाँ जन्मोत्सव भारत वर्ष के मूर्धन्य आर्य नेताओं, विद्वानों एवं गणमान्य व्यक्तियों के मध्य हर्षोल्लास एवं उत्साह पूर्वक मनाया। दिल्ली एवं देश के विभिन्न प्रान्तों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों के मध्य प्रातः 9:10 बजे आचार्य आनन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के पश्चात् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री राजीव आर्य जी एवं दोनों सभाओं के सभी उपस्थित पदाधिकारियों ने

महाशय जी का माल्यार्पण कर अभिवादन किया और सौ वर्षों से अधिक जीने एवं स्वस्थ रहने की कामना की। इस अवसर पर भारत के दूसरे प्रान्तों की सभाओं के पदाधिकारियों ने भी महाशय जी के लम्बे जीवन की कामना की।

उड़ीसा सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, विदर्भ सभा से श्री सत्यवीर शास्त्री जी, एवं श्री यशपाल 'ज्ञानवान' जी, हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी मंत्री मा. रामपाल जी, कन्यागुरुकुल देहरादून से आचार्या सन्तोष आर्या जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से, आचार्य यशपाल जी, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी से डा. राजकुमार रावत जी, राजस्थान से स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी (सांसद), स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी (गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली) स्वामी धर्ममुनि जी (आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़), डा. स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल। साध्वी उत्तमायति संचालिका सार्वदेशिक आर्य वीरांगाना दल दिल्ली, एवं माननीय श्री संतोष गंगवार जी केन्द्रीय कपड़ा मंत्री, श्री महेश गिरी जी (सांसद) एवं श्री यशपाल आर्य जी निगम पार्षद पूर्वी दिल्ली आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) को उनके 92वें जन्मदिवस के अवसर पर शुभकामनाएँ दी और उनके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना की।

आर्य जगत् के संन्यासीवृन्द, विद्वत्गण, गणमान्य व्यक्तियो तथा उपस्थित सभी आर्य महानुभावों की शुभकामनाओं को स्वीकार करते हुए कहा कि आप मुझे आशीर्वाद दें कि मैं समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करता रहूँ। ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा कि-प्रभु ने ही मुझे समाज की सेवा करने का सामर्थ्य दिया है। ईश्वर मुझे और शक्ति व बल दे कि जिससे मैं और अधिक आर्य समाज की सेवा कर सकूँ।

-विनय आर्य (महामंत्री)

हिन्दुओं की दुर्बलताएं

-- कृष्ण चन्द्र गर्ग

हिन्दुओं में कुछ कमियां और कमजोरियां हैं जिनके कारण वे भारत में 80 प्रतिशत होते हुए भी प्रभावहीन हैं। प्रस्तुत लेख में उन कमियों पर विचार किया है ताकि हिन्दु जाति उन पर चिन्तन करके अपनी कमजोरियों को दूर करके उन्नत हो तथा देश और विश्व में प्रभावशाली भूमिका निभा सके।

1. धर्मगुरुओं के गलत उपदेश : हिन्दुओं के धर्मगुरु उन्हें वीर, बहादुर, पराक्रमी, स्वाभिमानी, देशभक्त तथा परोपकारी बनने का उपदेश नहीं देते। वे उन्हें अपने बल, बुद्धि का प्रयोग करना भी नहीं सिखाते, वे उन्हें अन्धविश्वासी बनाकर गुरु पर आश्रित रहना सिखाते हैं। उन्हें शुभ कर्म करने की शिक्षा देने के बजाए, अच्छे–बुरे सब प्रकार के कर्म गुरु को अर्पण करने का उपदेश देते हैं। इस प्रकार हिन्दू मानसिक और बौद्धिक रूप से कमजोर और कायर बनकर गुरु के सहारे बैठ जाते हैं और उसे दक्षिणा रूप में धन देते रहते हैं।

2. ईश्वर की गलत अवधारणा : ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व अन्तर्यामी है। वह सारी सृष्टि को बनाने वाला है। वह हमारे सब अच्छे, बुरे कार्यों को देखता और जानता है तथा उनके अनुसार हमें सुख और दुख के रूप में फल देता है। ईश्वर के इस सत्य स्वरूप को न मानकर मिट्टी के खिलौनों को ईश्वर मान लेना, उनके आगे हाथ जोड़ देना, सिर झुका देना कोरी अज्ञानता के सिवाए और क्या है।

3. कर्म व्यवस्था को स्वीकार न करना: जैसा बुरा कर्म मनुष्य करता है वैसा की फल उसे ईश्वर की व्यवस्था से मिलता है। ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है, वह कोई सिफारिश नहीं मानता, रिश्वत नहीं लेता। अच्छे और बुरे कर्मों के फल भोगकर ही समाप्त होते हैं। उनसे बचने का कोई भी उपाय नहीं। फिर भी हिन्दू जाति कोई विपत्ति आने पर उसका कारण ग्रहों–नक्षत्रों को मानती है और इधर–उधर ढोंगियों से उपाय करवाती फिरती है। ज्योतिषी के नाम पर ये ढोंगी लोग ऐसे मानसिक रूप से कमजोर लोगों को झूठे आश्वासन देकर उनका धन लूटते हैं।

4. धर्म की गलत अवधारणा : मन, वचन, कर्म से सत्य का आचरण, पक्षपात रहित न्याय, परोपकार, सदाचार आदि ही धर्म है। पत्थर की मूर्ति पर दूध डालना और पेट भरे पण्डित को खिलाना, जनेऊ पहनाना, चोटी रखना आदि कर्म धर्म नहीं है। धर्म का सम्बन्ध शुद्ध आचरण से है, दिखावे और आडम्बर से नहीं।

5. मूर्तिपूजा को ईश्वर की पूजा मानना: मूर्तिपूजा ईश्वर की पूजा नहीं है। ईश्वर की पूजा तो हो ही नहीं सकती। उसे हमारी पूजा की जरुरत भी नहीं। वह कभी प्रसन्न या अप्रसन्न नहीं होता। वह तो सदा आनन्द स्वरूप है। मूर्तिपूजा व्यर्थ है। इसने आज तक हिन्दुओं को दिया ही क्या है? मूर्तिपूजा के कारण हिन्दू जड़बुद्धि, विवेकहीन और शुभ कर्म विहीन हो गए हैं। हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को मुसलमान हमलावरों और शासकों ने तोड़ा और लूटा है। कोई एक मूर्ति किसी आक्रमणकारी की एक टांग भी न तोड़ सकी। अनेक लड़ाइयों हिन्दुओं ने मूर्ति में शक्ति के झूठे विश्वास के कारण मुसलमानों से हारी हैं जिनके परिणामस्वरूप हिन्दुओं को भयानक रक्तपात, लूटपाट और दासता झेलनी पड़ी है।

6. गलत और प्रक्षिप्त साहित्य : हिन्दुओं ने अपने असली और सही ग्रन्थ चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद को तो भुला दिया है गप्पों से भरे अठारह पुराणों को अपना लिया है। पुराणों के अन्दर ज्यादातर बातें झूठी, असम्भव, अनैतिक और अश्लील हैं हिन्दू बेशक इन पुराणों को पढ़ते तो बहुत कम हैं पर पण्डित लोग इन्हीं पुराणों के आधार पर कथा–वार्ता और उपदेश करते हैं। हिन्दू ऐसे उपदेशों को ही सुनते हैं, उन पर विश्वास करते हैं। ऐसे उपदेशकों को विद्वान और पुराणों को ही असली धर्म ग्रन्थ मानते हैं। जैसा साहित्य वैसी बुद्धि। इसलिए हिन्दुओं की बुद्धि तार्किक नहीं है। हिन्दू साहित्य की दूसरी बड़ी समस्या है कि रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों में बड़ी भारी मिलावट है जैसे गंगा गंगोत्री से चली तो पूरी तरह स्वच्छ और पवित्र है परन्तु आगे आकर गन्दगी मिलने से दूषित हो गई हैं। पर हिन्दू इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते, करते भी तो नीर–क्षीर करने की जरुरत नहीं समझते। इसलिए हिन्दू अविद्या–अन्धकार में फंसे रहते हैं।

7. झूठी आस्था – हिन्दुओं में तार्किक बुद्धि और वैज्ञानिक सोच का अभाव है। आस्था के नाम पर वे बुद्धि को ताक पर रखकर हर गलत बात को सही और असम्भव को सम्भव मान लेते हैं। झूठ मनुष्य को उन्नति की ओर नहीं ले जा सकता, वह तो अवनति की ओर ही ले जाता है। रेत को खाण्ड मानने से वह खाण्ड नहीं बन जाता। आस्था सत्य पर ही आधारित होनी चाहिए, झूठ पर नहीं। इसीलिए हिन्दू भ्रमजाल में फंसे रहते हैं।

8. सभी मजहब एक से हैं - की झूठी धारण-प्राय- करके हिन्दू माने बैठे हैं कि सभी मजहब एक ही सत्य ईश्वर की ओर ले जाते हैं। यह बात उतनी ही गलत है जितनी कह देना कि चण्डीगढ़ से सभी रास्ते दिल्ली को जाते हैं। सभी सम्प्रदायों में ईश्वर, जीवात्मा, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि की अवधारणाएं अलग–अलग हैं। मुसलमान तो गैर–मुसलमान को यातनाएं देना और जान से मार देना स्वर्ग में जाने का साधन मानते हैं। हिन्दुओं को छोड़ सभी सम्प्रदायें अपने–अपने सम्प्रदाय को सबसे बढ़िया बताते हैं और उसे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। वैदिक धर्म की मान्यताएं सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी हिन्दू उनसे अनभिज्ञ हैं और जानने की इच्छा भी नहीं रखते। सरकार द्वारा प्रसारित 'सर्वधर्म समभाव' की झूठी धारणा को हिन्दू गले लगाए हुए हैं और झूम–झूम कर झूठा गीत गाया जाता है मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना। इसलिए हिन्दू सदा घाटाओं की स्थिति में रहे हैं, इन्होंने कभी बढ़ाओं की ओर प्रयास ही नहीं किया।

9. मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा : वेद ने ईश्वर को शरीर रहित (अकायम्), अजर, अमर, अजन्मा, नित्य और पवित्र बताया है। परन्तु हिन्दुओं ने अपनी कल्पना से अलग–अलग तरह के भगवान बना लिए हैं। ईश्वर का विषय मन और आत्मा से सम्बन्धित है परन्तु मूर्तिपूजकों ने इसे आँख का विषय बना लिया है। पण्डितों द्वारा मूर्ति में प्राण–प्रतिष्ठा का ढोंग भी हिन्दुओं को समझ में नहीं आता। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी जानता है कि पत्थर की मूर्ति में न तो देखने–सुनने की शक्ति है, न उसमें कुछ समझने या करने की शक्ति है, न ही उसमें प्राण पड़ सकते हैं। पुजारी तो धन ऐंठने के लिए हिन्दुओं को बेवकूफ बनाते हैं। पर हिन्दू क्यों मूर्ख बनते हैं? यह बात समझ से परे है।

10. गरीबों के प्रति सहानुभूति की कमी – हिन्दुओं में दान देने की प्रवृत्ति तो है, पर देते गलत जगह पर हैं। वे निठल्ले और पेट भरे पण्डितों को दान देते हैं जो महापाप है। दान तो जरुरतमन्द को और विद्या के प्रसार के लिए देना चाहिए। बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने चाहिए, कल–कारखाने लगाने चाहिए। ईश्वर के नाम पर मन्दिर में देना अपने आपको धोखा देना है क्योंकि ईश्वर देता है, लेता नहीं।

11. हिन्दुओं में अज्ञानता और अन्धविश्वास- अज्ञानता और अन्धविश्वास के कारण हिन्दू झूठे कर्मकाण्डों में फंसे हुए हैं। जो मर चुके हैं उनके लिए वे श्राद्ध करते हैं, ईश्वर–भक्ति के नाम पर जगराता करते हैं। ईश्वर को खुश करने के लिए वे पेड़–पौधों और नदी–तालाबों को पूजते हैं, ईश्वर का मनुष्य रूप में आना–जाना मानते हैं। तथाकथित ज्योतिषियों से वे अपना भूत और भविष्य पूछते फिरते हैं, दुख तकलीफ को टालने के लिए धागे–तावीज, जन्त्र–तन्त्र करवाते फिरते हैं।

12. भौंडे गीत : हिन्दू औरतें कीर्तनों में बड़े घटिया किस्म के, बेतुके, बेसिर–पैर के गीत गाती हैं। उन्हें वीरता के सदुपदेश देने वाले, सत्य इतिहास बताने वाले सार्थक गीत गाने चाहिएं।

13. जगराते - पाप कर्म–हिन्दुओं में जगराते की कुप्रथा पिछले 40 या 50 वर्षों से आरम्भ हुई है। ईश्वर भक्ति के नाम पर लाउडस्पीकर की ऊँची आवाज में रात भर घटिया किस्म के गीत गाते हैं। फिर घटिया, असम्भव, विनाशकारी कहानी कहते हैं। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी इन जगरातों की निस्सारता को समझ सकता है, तो फिर हिन्दू क्यों नहीं समझते?

14. जातपात - जन्म की जातपात ने हिन्दू समाज को बांट दिया है, बेहद खोखला और कमजोर किया है। जातपात की बात पूरी तरह समाप्त होनी चाहिए। सभी की एक जाति–मनुष्य जाति–समझी जाए।

15. इतिहास को भुला दिया- इतिहास से सीख लेकर किसी भी समाज को आगे की रणनीति बनानी चाहिए। अगर आप इतिहास से सबक नहीं सीखते तो आपके साथ फिर वही कुछ होगा जो पहले हो चुका है। मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आठवीं सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक अथाह अत्याचार किए हैं। उन्होंने हज़ारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा। वहां से सोना, चाँदी,

हीरे, जवाहरात के रूप में बेहद धन लूटा। उन्होंने मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं, पुजारियों को गाजर-मूली की तरह काटा, करोड़ों की संख्या में हिन्दुओं का कत्लेआम किया, करोड़ों हिन्दुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया, लाखों हिन्दू महिलाओं से बलात्कार किया। अब भी पाकिस्तान, बांग्लादेश, कश्मीर आदि स्थानों पर जहां मौका लगता है वे वही कुछ कर रहे हैं। 1946 में जब पाकिस्तान बना था। तब पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी 20 प्रतिशत के लगभग थी और अब 1 प्रतिशत रह गई है। बंग्लादेश में तब 30 प्रतिशत हिन्दू थे अब 7 प्रतिशत रह गए हैं। कश्मीर में हिन्दुओं पर अत्याचार किए और लगभग सवा तीन लाख हिन्दुओं को कश्मीर छोड़ने पर मजबूर कर दिया। पर हिन्दुओं ने इन सब घटनाओं से कोई सबक नहीं सीखा। हिन्दू अपने मित्र और शत्रु में अन्तर नहीं कर पाते। जो उन्हें समझाता है उसे वे अपना शत्रु मानते हैं और जो उन्हें बहकाता है उसे वे अपना मित्र मानते हैं। यह बहुत ही दुख का विषय है।

16. हिन्दुओं में नेतृत्व और संगठन का अभाव - हिन्दुओं का कोई तगड़ा नेता नहीं है जो सारी हिन्दू जाति को संगठित और सशक्त बना सके।

17. कब्र पूजा - हिन्दू मुसलमानों की कब्रों से खैर मांगते फिरते हैं, ये वे कब्रें हैं जिनमें हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुसलमानों को कभी दबाया गया था। यह मूर्खता की पराकाष्ठा है, हिन्दू वीरों का अपमान है और अपनी जाति से गद्दारी है। यहां कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं .....

अजमेर की दरगाह शरीफ में सूफी सन्त मुइनुद्दीन चिश्ती की कब्र है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (गरीब नवाज) का जन्म 1141 में अफगानिस्तान में हुआ था। वह मुहम्मद गौरी के साथ भारत आया था। उसने भारत आकर 700 हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था। अजमेर में जिस स्थान पर दरगाह है वहां पर पृथ्वीराज चौहान का राज्य था। मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज चौहान को पकड़कर उसकी आँखें निकालकर उसे बन्दी बनाकर अपने साथ अफगानिस्तान ले गया था।

बहराइच (उत्तर प्रदेश) के पास मसूद गजनी की मजार है। मसूद गजनी, सोमनाथ मन्दिर पर हमला करने वाले महमूद गजनवी का बेटा था। उसने 1033 में बड़ी सेना के साथ भारत पर आक्रमण किया था। जून 1033 में बहराइच के मैदान में मसूद गजनी की और भारत के हिन्दू राजाओं की सेनाओं के बीच जबरदस्त लड़ाई हुई लड़ाई में मसूद मियां की सेना की हार हुई तथा वह स्वयं भी मारा गया। मुसलमानों ने उसे वहीं दबा दिया तथा उसे गाज़ी की पदवी दे दी। मुसलमानों में गाज़ी की पदवी सबसे बड़ी पदवी मानी जाती है। यह पदवी उसे दी जाती है जिसने गैर-मुसलमानों का कत्लेआम किया हो। वहां पर मुसलमान हर वर्ष इकट्ठे होते हैं और त्यौहार मनाते हैं। दुख और आश्चर्य की बात है कि हिन्दू उन हिन्दू वीरों को तो भूल गए जिन्होंने अपनी जाने देकर मसूद मियां को मारा तथा उसी सेना को हराया था। उलटा इस मसूद मियां की कब्र पर मन्नतें मांगने जाते हैं और टी. वी. चैनल इसे धार्मिक सद्भावना एवं धर्मनिरपेक्षता का जीता जागता प्रमाण बताते हैं।

महाराष्ट्र के एक गांव में आलीशाह की मजार है। बृहस्पतिवार के दिन हिन्दू औरतें उसे पूजती हैं। अलीशाह कौन था? औरंगजेब के समय में अलीशाह नाम का एक मुसलमान था। वह बहुत अत्याचारी था। इलाके में उसका बहुत आतंक था। वह गांव में घूमता रहता था, जो सुन्दर हिन्दू लड़की दिखती उसे अपनी वासना का शिकार बनाता था, जिस हिन्दू सेठ साहूकार से जो धन मांगता वह उसे देना पड़ता था। जब किसी हिन्दू युवक का विवाह होता था तब नई दुलहन को पहली रात अलीशाह के साथ बितानी पड़ती थी। जो कोई इस बात को न मानता उसके परिवार को वह समाप्त कर देता था। लगभग बीस गांवों के क्षेत्र में उसका प्रभाव था। हिन्दू उसके सामने मजबूर थे। कई वर्ष तक ऐसा चलता रहा। फिर एक गांव में धनी परिवार के युवक जोरावर सिंह का विवाह हुआ। अलीशाह का सन्देश आ गया कि उसकी पत्नी को उसके पास भेज दो। जोरावर सिंह ने उत्तर भेज दिया कि उसकी पत्नी अपनी एक दासी के साथ उस रात उसके पास पहुंच जाएगी। जोरावर सिंह ने अपने एक मित्र उदय सिंह को साथ लिया। दोनों ने स्त्री का वेश धारण किया, हथियार साथ लिए और गाड़ी में बैठकर अलीशाह के यहां पहुंच गए। नशे में धुत्त अलीशाह तथा और बहुत से मुसलमान गाड़ी के पास आ गए। जोरावर सिंह और उदय सिंह ने अलीशाह तथा उसके परिवार के सभी सदस्यों को मार गिराया। मुसलमानों ने अलीशाह को शहीद की उपाधि दी और उसकी मजार बना दी। हिन्दू जोरावर सिंह और उदय सिंह को तो भूल गए, अलीशाह की कब्र को पूजने लगे। – साभार, आर्य मित्र

गतांक से आगे...

"भूली विसरी विभूति"
"स्वर्गीय महाशय गोविंदरामजी आर्य"

– भीम सेन कामराह

नवाब लंदन से वापस लौटे तो अपनी स्टेट को इस अवस्था में देखकर उसका मन पसीजा, हृदय में प्रेरणा जगी अतः शांति व्यवस्था के प्रयत्न किए। कुछ मुल्ला मौल्लिवयों को दण्डित भी किया। रियासत के हिंदु भाइयों, को अपने निवास स्थान डेरा नवाब अहमदपुर शरकिया में आमन्त्रित किया। उच्चशरीफ से महाशय जी के नेतृत्व में सभी भाई डेरा नवाब पहुँचे। लगभग एक घंटे तक इस प्रकार की घटनाओं पर खेद व्यक्त करते हुए नवाब साहिब ने आश्वस्त करने के प्रयास किया कि तुम मेरी प्रजा हो आप सबकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। परन्तु महाशय जी का कहना था कि इसमें ही हम आप का उपकार मानेंगे कि आप हमें सुरक्षित भारत पहुँचा दें। इस प्रकार नवाब साहिब ने कुछ सुरक्षा प्रबंध अवश्य किए फिर भी छुटपुट घटनाएं होती रही। जनवरी 1948 को उच्चशरीफ वासी अपना पैत्रिक स्थान छोड़कर फरवरी, 1948 में ट्रेनों द्वारा, ट्रकों द्वारा सर्व प्रथम हिन्दुमल कोट एवं फाज़ल्का (पंजाब भारत) पहुँचे।

धर्मांतरण का रोग आज भी भारत को घुन की तरह लगा हुआ है। यह दुष्प्रवृति पच्चास साठ वर्ष पूर्व भी थी। उच्चशरीफ में श्री नियामत राय जो एक दर्जी का कार्य करते थे विधर्मी होने से बचा लिया और हिन्दु महिला से विवाह कराया। इसी संदर्भ में उन्हीं दिनों की ही यह घटना है। एक उदण्ड व्यक्ति, शरीर में गठीला मुस्लिम सम्प्रदाय से सम्बंधित, अबासिया नहर के समीप, उच्चशरीफ नगर को जाने वाले रास्ते में, पडौसी गाँव से आकर अपने साथ रखे लट्ठ का भय दिखाकर धर्म परिवर्तन करने के प्रयास में लगा हुआ था। कुछ ही दिनों में जब महाशय जी को इस कुकृत्य की सूचना मिली तो आत्मिक शक्ति के धनी का आवेश में आना स्वाभाविक था। अगले दिन प्रातः अपने साथ कुछ साथियों सहित वहाँ जा कर उसे धर दबोचा, स्वयं उस व्यक्ति को गर्दन से पकड़कर घसीटकर लाते हुए, थाने मे बन्द करा दिया।

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है" इस आर्य समाज के छठे नियम पर महाशय सोमदेव जी की घटना के उपरान्त विभाजन पश्चात् डा. राजेन्द्र सिंह की घटना इस प्रकार है। महाशय जी का घर का न. 2696 है और बिल्कुल पड़ोसी मकान न. 2695 सरदार श्री गुरु बख्श सिंह जी जो बड़े सज्जन स्वभाव एवं साधु वृति के व्यक्ति थे बेटा डा. राजेन्द्र सिंह, जो उस समय MNA DEGREE College Asthal Bohar Rohtak से डाक्टर की उपाधि लेने के बाद, हरियाणा में अपने एक सहपाठी के साथ जाखल मंडी में प्रैक्टिस शुरू कर दी। क्योंकि उनका वह सहपाठी अपनी डाक्टर की परीक्षा में अनुतीर्ण हो गया था। उसने डा. राजेन्द्र सिंह को अपने जाल में फंसाकर जाखल मंडी में मैडिकल स्टोर राजेन्द्र सिंह की डिग्री का लाभ उठाकर स्टोर खोल दिया। यह लालच देकर कि इस में तुम भी बराबर के सांझीदार हो अतः उन लोगों ने राजेन्द्र सिंह की ओर से फर्म में पैसा लगना चाहिए।

डा. राजेन्द्र सिंह के पास पैसा न होने से उन लोगों ने कुछ प्रोनोट अपने नाम में लिखवा लिए और उन प्रोनोटस का आधार लेकर, डा. राजेन्द्र सिंह से पिता को वे लोग अन्ट शन्ट पत्र लिखवाया करते। जाखल मंडी से अपने सदस्य भेजकर कुछ नकद रकम सरदार गुरु बख्श सिंह जी से ले भी गए। यह सिलसिला कुछ समय तक चलता रहा। पिता गुरु बख्श सिंह उन पत्रों तथा हालात को देखते हुए समझने लगे कि यह मेरा एकमात्र बेटा बिगड़ गया है। इस अवधि में एक पोस्ट कार्ड श्री गुरु बख्श सिंह को मिला जिसमें लिखा था कि पूज्यवर गुरुदेव पिताजी, मैं यह पत्र पेशाब का बहाना बनाकर रेलवे इंजन ड्राईवर को पोस्ट करने के लिए दे रहा हूँ। यदि यह मेरा पत्र आपको मिले तो इसे ही मेरा सही पत्र समझना जिसके कोने पर क्रास का निशान बना है, शेष पत्र में दबाव में लिखता रहा हूँ मेरा जीवन खतरे में है। मुझे बचा लीलिए।

मेरी (यह संस्मरण लेखक) श्री गुरुबख्श सिंह से मित्रता थी, निकटता अधिक थी। अपने सामने आई इस विपत्ति तथा राजेन्द्र सिंह के पत्र का विवरण श्री गुरूबख्श सिंह जी ने मुझे दिया। मैंने पूज्य पिता श्री गोबिंदराम जी से चर्चा की महाशय जी को इस घटना ने विचलित कर दिया। महाशय गोबिंदराम जी ने अपने मित्र श्री खूबचंद धमीजा से बात की। उन्होंने अपने रिश्ते में एक सरपंच उस क्षेत्र में होने बात बताई। अतः महाशय जी, श्री खूबचंद जी तथा श्री गुरूबख्श सिंह जी 20,000 रूपये अपने साथ लेकर, हरियाणा के सरपंच महोदय के पास पहुँचे क्योंकि जाखल मंडी का क्षेत्र, उनके अधिकार में नहीं था, अतः उन्होंने उस क्षेत्र में, अपने मित्र एस.डी.एम.साहब के नाम पत्र दे दिया। एस.डी.एम. साहब ने पूर्ण सहयोग दिया। सारी व्यथा सुनकर निष्कर्ष दिया कि सर्व प्रथम डा. राजेन्द्र सिंह को पुलिस अपनी कस्टडी में ले अन्यथा उन लोगों को भनक मिलते ही डा. राजेन्द्र सिंह को गुम कर दें। इस विचार से एस.एच.ओ. द्वारा एक कॉस्टेबल को खूबचंद जी के

साथ टैम्पो में बैठाकर जाखल मंडी भेजा गया, वहाँ डा. राजेन्द्र सिंह को यह कहकर कि किसी रोगी के उपचार में गड़बड़ होने से, पूछताछ के लिए पुलिस स्टेशन बुलाया है और उन्हे टैम्पों में बैठा कर एस.एस.ओ. के पास ले आए। उनके पीछे पीछे स्टोर के मालिक सगे संबंधी चाचा आदि भी पहुँच गए। सारी कहानी सामने आ गई। महाशय जी को एक ओर ले जाकर वे लोग कहने लगे कि महाशय जी! आप एक ओर हो जाओ, हमें चूसने दो। वहाँ भी महाशय जी की आत्मिक शक्ति ने उन्हें साम्प्रदायिकता से हटकर मानव धर्म का दिया जाने वाला उपदेश प्रभावित कर गया और सभी प्रोनोट आदि नष्ट करने के बाद कुछ भी पैसा न देकर डा. राजेन्द्र सिंह को सकुशल पावस देहली ले आए। इस प्रकार एक महान विभूति जो ईश्वर विश्वासी थे, को पुनः सफलता प्राप्त हुई। इस प्रकार एक पिता को अपने सुहृद से मिला दिया।

स्वतंत्रता के बाद भी गौ हत्या कंलक भारत से नहीं मिट पाया भारत सरकार और प्रांतीय सरकारें गौ–वंश की हत्या पर कड़ा प्रतिबंध लगाएँ और इसके सवर्धन के लिए उत्साह पूर्वक ठोस प्रयास करें। अतः महानगर दिल्ली में वर्ष 1966 में गौ रक्षा का विशाल स्तर पर आंदोलन हुआ। महाशय जी ने इस आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर सामूहिक प्रदर्शनकारियों के रूप में गिरफतारी दी। तिहाड़ जेल में स्थान न होने की स्थिति में उन्हें अम्बाला जेल में स्थानान्तरित कर, एक माह के पश्चात् रिहा किया गया।

सच्चे व्यक्तित्व के खोजी महाशय जी!

महाशय जी की प्ररेणा से श्री राम स्वरूप सेठी जी के जीवन में ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा एवं वैदिक विचारधारा प्रस्थापित हो जाने के कारण वैदिक धर्म में पूर्ण निष्ठा होने से सेठी जी को आर्यसमाज पटेल नगर में भी प्रधानपद पर आसीन किया गया। इस प्रकार के आकर्षक व्यक्तित्व की खोज से आर्य समाज को एक कर्मठ कार्यकर्त्ता–सच्चा सेवक, महाशय जी की सूझबूझ से आर्य समाज को मिल गया तथा श्री सेठी जी का जीवन भी सच्ची संस्था से जुड़ गया। यह है परोपकार की भावना से किसी का जीवन परिवर्तित करने का शुभ कार्य।

आत्मिक शक्ति के बल पर ईश्वर की प्रेरणा से अपने जीवन में उत्तम कार्य करते हुए स्वस्थ अवस्था में 10 नवम्बर 1986 की रात्रि को शयन स्थिति में जगत नियन्ता परमेश्वर की गोद में सदा के लिए समाधिस्थ हो गए।

ऐसी थी वह महान विभूति जो सदैव प्रकाश स्तम्भ के रूप में समाज में मानव मात्र के कल्याण हेतु हमारा पथ प्रदर्शन करती हरेगी।

2696, शादीपुर मैन बाजार,
वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली

महामना मालवीयजी के सदुपदेश

– प्रोफेसर मुकुट बिहारी लाल

मनुष्यता

1. "ब्रह्म की ज्योति अपने भीतर ही है, वह सब जीवाधारियों में समान है।"
2. "मनुष्य के पशुत्व को ईश्वरत्व में परिणत करना ही धर्म है।"
3. "मनुष्यत्व का विकास ही ईश्वरत्व और ईश्वर है।"
4. "मनुष्यत्व सर्वोपरि है। उसका स्थान जात–पात और सामुदायिक भ्रातृत्व से ऊपर है।"
5. "मनुष्यत्व मनुष्य का विशिष्ट गुण है। मनुष्यत्व से रहित मनुष्य पशु के समान है।"

समता -

6. "परमात्मा की सृष्टि में मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद नहीं। सब ही बुद्धि और विकास के समान नियमों के अधीन हैं।"
7. "सब में समान जीव है।" "जो सब परिस्थितियों में अपनी उपमा से सबको समान देखता है वह योगी है।"
8. "समत्व की सिद्धि ही जीवन सिद्धि है। "सबके साथ आत्मौपम्य निष्पक्ष व्यवहार" उसकी मांग है। "जीवमात्र से प्रेम" उसकी शर्त है। "प्राणिमात्र की निष्काम सेवा" उसका साधन और मानव का परम धर्म है।
1. "प्रत्येक मनुष्य अपने को एक बड़ी समष्टि की इकाई समझकर उसके हित के लिए जीवित रहे और काम करे, लोककल्याण और लोकसंग्रह को परम पुरुषार्थ समझे।"

धर्म -

10. "हर परिस्थिति में दृढ़ता के साथ धर्म का पालन मनुष्य का पुनीत कर्तव्य है।" "धर्म अविनाशी है, सुख–दुख आते जाते हैं।"
11. "धर्म उन व्यवस्थाओं, उन नियमों का नाम है जो समाज को राज्य के भिन्न अंगों को धारण किये रहता है।"
12. "धर्म का उद्देश्य देश में शान्ति, समृद्धि और सुख उत्पन्न करना तथा मनुष्य को पारलौकिक विषयों के चिन्तन करने के योग्य बनाना है।"
13. "शास्त्रविहित विधियों का अन्धवत् अनुकरण हानिकार है। शास्त्रविहित शब्दों का वास्तविक तात्पर्य और अर्थ समझना और उन शब्दों के साथ उच्च भावों और विचारों का सम्बन्ध करना सामाजिक व्यवहार और नीति के सुधार के लिए आवश्यक है।"
14. "बिना मूल सिद्धान्तों को दृढ़ किये धर्म का प्रचार और उसकी उन्नति करना ऐसा ही असंभव है, जैसा कि बिना किसी बुनियाद के किसी इमारत को खड़ा करना।
15. जनता में धर्म के सजीव तत्त्वों और मूल सिद्धान्तों का प्रचार किया जाय, उसमें उचित गुण उत्पन्न किये जायें, उसे अपने कर्तव्यों का ज्ञान कराया जाये और इस तरह समाज में जीवन शक्ति संचारित की जाये।
16. "समाज सुधार शाश्वत, सर्वकालीन है।" धर्म और संस्कृति के मूल सिद्धान्तों की अंधविश्वास से निर्मुक्त शास्त्रानुकूल व्याख्या द्वारा दोषपूर्ण प्रथाओं और रुढ़ियों का संशोधन किया जाय। ज्ञान के सजीव तत्त्वों को पुष्ट किया जाये, लोक–कल्याण का विस्तार किया जाये।

तप -

17. समाज के उत्कर्ष में संलग्न समाज–सुधारक अपने आचार–व्यवहार का संशोधन करें और प्रगतिशील सजीव मर्यादाओं का दृढ़ता से पालन करें।
18. तप तीन प्रकार के सात्विक, राजसिक, तामसिक होते हैं। तामसिक तप से अधःपतन, सात्विक तप से जीवन का उत्कर्ष और समाज की अभिवृद्धि होती है।
19. तामसिक और राजसिक प्रक्रियाओं और मनोभावों को त्याग कर सात्विक तप का अनुसरण किया जाये।
20. "सच्चा तप यह है कि अपने भाइयों के ताप से तपा जाय, सच्चा यज्ञ यह है जिसमें अपने स्वार्थ की आहुति दी जाय। सच्चा दान यह है कि परमार्थ किया जाय, और सच्ची ईश्वर सेवा यह है कि उसके दुःखी जीवों की सहायता की जाय।"
21. सात्विक तप से "अभ्युदय और निःश्रेयस, स्वर्ग और मोक्ष, धन और सम्पत्ति, नाम और यश, बल और पराक्रम, सुख और शान्ति, राज्य और अधिकार सब की ही प्राप्ति होती है।"
22. "जो तप निष्काम भाव से फल ही इच्छा त्याग कर , दान दया से सम्पन्न होकर श्रद्धा और धैर्य के साथ मन, वाणी और शरीर से किया जाता है, वह सात्विक कहलाता है।"
23. "मन को जीतना अर्थात् काम–क्रोध–लोभ–मोह से बचना, और शुद्ध संकल्पयुक्त रहना, किसी विषय वृत्ति के कारण विक्षिप्त होकर फिर भी उस पर विजय प्राप्त करना, व्यवहार–काल में छल–कपट, धोखा, फरेब से मन को दूर रखना, मन को सात्विक बनाना है। यह मन द्वारा सात्विक तप करना है।"
24. "वाणी का सात्विक तप यह है कि जो वाक्य असत्य, दुःखदायी, अप्रिय और खोटा हो उसे किसी समय, किसी भी अवस्था मे मुंह से न निकालना, बल्कि प्रिय, सत्य और मधुर वचन बोलना।"
25. "शरीर से अर्थात् शरीरावयवों, हस्तपादादि कमेन्द्रियों द्वारा दूसरों की सहायता और सेवा करना, गिरे हुओ को उठाना, देश और जाति की सेवा के लिए अपने शरीर के कष्ट और दुःख ही परवाह न करना, बल्कि यदि आवश्यक हो तो धर्म और परोपकारार्थ शरीर अर्पण कर देना, यह काया का सात्विक तप है।"
26. "सच्चे तप का भाव उस देश भक्त में है, जो अपने देश एवं अपनी जाति के गौरव और प्रतिष्ठा, कीर्ति और मान, सम्पत्ति और ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए दृढ़ इच्छा रखता है, तथा अनेक प्रकार के दुःखों, और कष्टों को सहन करने, कठिन से कठिन मेहनत और श्रम को उठाने और विहनों से मुकाबला करने को उद्यत रहता है।"

सत्य और शील

27. "बिना कई लोगों के मिले कोई बड़ा कार्य नहीं हो सकता। लोग आपस में मिलकर तभी कार्य कर सकते हैं, जब उनमें परस्पर विश्वास हो। परस्पर विश्वास तभी हो सकता है, जब सब के सब सत्य के अनुयायी हों।"
28. सत्य जीवन का प्राण, समाज की उन्नति का साधन, तथा नैतिकता, सहयोग और संस्कृति का आधार है।
29. "शील मानव का सब से उत्तम भूषण" और "धर्म का लक्षण है।"
30. "राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को आचार के शासन से सदा शासित तथा प्रभावित रहना चाहिए, तभी उनमें विश्वास, मृदु–भाषण तथा व्यवहार की सच्चाई और सद्गुणों का विकास हो सकता है।"
31. "धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध धर्म के दस लक्षण हैं।"
32. चित्त शुद्धि, ईश्वर की आराधना, समाज के हित की कामना, लोक कल्याण में लगन, मनुष्यता से विभूषित शील, विनय पूर्वक सेवा, विवेकपूर्ण साहस, देश–भक्ति, सदाचार–नैतिक उत्कर्ष के साधन हैं।

शुद्धि सम्मेलन का सफल आयोजन

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के "शुद्धि सम्मेलन" अपने निश्चय के अनुसार दिल्ली में पहली बार आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली में रविवार 5 अप्रैल 2015 को आयोजित किया गया। सम्मेलन में विचारणीय विषय था – **"वर्तमान समय में शुद्धि कार्य की आवश्यकता"**। इस सम्मेलन के दो सत्र थे पहले सत्र के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह जी, संयोजक श्री चतर सिंह नागर जी थे। श्री नरेन्द्र मोहन वचेला जी ने स्वागत भाषण दिया ।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता सनातन धर्म सभा के श्री रजनीश गोइंका जी ने की। मुख्यअतिथि महाशय धर्मपाल आर्य जी एम.डी.एच., तथा इस सत्र के स्वागत अध्यक्ष श्री हरबंस लाल कोहली जी ने अपने विचार रखे। इन दोनों सत्रों में आर्य समाज, विश्व हिन्दू परिषद तथा सनातन धर्म के प्रतिनिधियों ने अपने अपने विचार सुझाव दिये। इनमें कुछ प्रमुख वक्ताओं के नाम निम्नलिखित हैं– श्री प्रवण मिश्र (प्रचारक), श्री विजेन्द्रपाल सिंह (प्रचारक), श्री सुन्दर मुनि (प्रचारक), श्री रामनाथ सहगल प्रधान, शुद्धि सभा, श्री मामचन्द रिवारिया, ठाकुर विक्रम सिंह जी, डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, श्री राजेन्द्र दुर्गा, आचार्य रामनारायण शुक्ल, श्री विजय गुप्त, श्री कीर्ति शर्मा, डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया, स्वामी प्रणवानन्द जी आचार्य, गुरुकुल गौतम नगर, श्री पदमचन्द आर्य (मेवात), डॉ. पूर्ण सिंह डवास, स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल), श्री विनय आर्य महामंत्री (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), महाशय धर्मपाल जी चैयरमेन एम.डी.एच. ।

इस अवसर पर आगरा उ.प्र. से उन परिवारों को विशषे रूप से आमन्त्रित किया गया था। जो मलकाना राजपूतों के वशंज हैं और जिनको स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा 1923 में शुद्ध करके वैदिक हिन्दू धर्म में प्रवेश करवाया गया था। इसके लिये सभी ने शुद्धि सभा के अधिकारियों की सराहना की। सम्मेलन में जिन वक्ताओं ने अपने अपने विचार रखे उन सबका मुख्य आशय था कि आज शुद्धि कार्य की अवश्यकता है। क्योंकि हिन्दुओं की जनसंख्या दर कम होती जा रही है जो खतरे की घंटी है और जो देश के दोबारा विभाजन का कारण बन सकती है। उपस्थित महानुभावों की एक ही राय थी की शुद्धि कार्य को उसी प्रकार किया जाये जिस प्रकार से इसाई व इस्लाम मत के लोग चुपके चुपके करते हैं। परन्तु इसमें यह भी देखना होगा कि शुद्धि का कार्य किसी लालच व दबाव में ना किया जाये। और इसको वैदिक धर्म की उत्तम मान्यताओं के आधार पर किया जाये। कोई विधर्मी अगर अपना धर्म व विचाधारा वैदिक धर्म की मान्यताओं से उत्तम बताता है तो उसको इस विषय में शास्त्रार्थ की चुनौती है।

इस अवसर पर श्री एस.एम. गुप्ता जी द्वारा लिखित पुस्तक **"महात्मा गांधी के हिन्दुत्व पर विचार"** का विमोचन महाशय धर्मपाल जी द्वारा किया गया।

–हरबंश लाल कोहली (का. प्रधान)

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का 63वाँ वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया।

आर्य समाज राजेन्द्रनगर नई दिल्ली का 63 वाँ वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेदीय बृहद्यज्ञ का कार्यक्रम दिनांक 11 अप्रैल से 19 अप्रैल तक बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन सायं 7 से 9 बजे तक वेदप्रचार का विशेष प्रकार का कार्यक्रम हुआ, जिसमें हेमंत शास्त्री जी (पुणे) के सुमधुर भजनों के पश्चात् डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी के हृदयग्राही उपदेश हुए।

प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ के कार्यक्रम में आर्य जनता ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, इससे पूर्व दिनांक 11 अप्रैल को आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ, इसमें दिल्ली प्रदेश की आर्य समाजों से अनेक आर्यमहिलायें उपस्थित थीं दिनांक 12 अप्रैल को बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हर्षाल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें विभिन्न स्कूलों के 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया 19 अप्रैल प्रातः यज्ञपूर्णाहुति के बाद आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका विषय था, "आर्य समाज की दशा एवं दिशा" अनेक वैदिक विद्वानों ने इसमें अपने विचार रखे, जिनमें से प्रमुख थे, डॉ. चान्द किरण सलूजा, आचार्य गवेन्द्र जी, आचार्य श्याम देव जी, डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री आदि। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. शिवदत्त पाण्डेय जी ने की, समाज के यशस्वी प्रधान एवं सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री अशोक सहगल जी ने विभिन्न समाजसेवियों को आर्य रत्न की उपाधि देकर सम्मानित किया।

दिनांक 12 अप्रैल को सम्पन्न हुए बाल सम्मेलन के सफल प्रतिभाशाली छात्र व छात्राओं को विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन आर्यसमाज के कर्मठ मंत्री श्री सतीश चन्द मैहता जी ने किया। श्री ओमप्रकाश खत्री एवं श्रीमती सुरीला खत्री द्वारा आयोजित ऋषि लंगर के साथ कर्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– नरेन्द्र मोहन वलेचा

अप्रैल –2015 के आर्थिक सहयोगी

श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा जी, प्रधान आर्य समाज इन्द्रानगर, बैंगलौर		3000/–
आर्य समाज सी–3 ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली		2100/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर	मासिक सहायता	1500/–
आर्य समाज मालवीय नगर, नई दिल्ली		1100/–
श्री प्रो. डा. सुन्दर लाल कथूरिया जी, बी–ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली		1100/–
श्रीमती उमा बजाज जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		1100/–
श्री ईश कुमार गक्खड, बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली		1100/–
आर्य समाज, अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै.–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
श्रीमती वासंती देवी चौधरी जी, अशोक विहार,	पति की पुण्य स्मृति में दान	1000/–
श्रीमती सरोज सहगल जी, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	आजीवन + दान	600/–
श्री विजय गुप्त जी, "आशु कवि" मदनगीर, नई दिल्ली		500/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्री शिव कुमार पटवा जी, अणु शक्ति नगर, मुंबई	आजीवन	300/–
श्री रामसिंह शर्मा जी, वैभव खण्ड, इन्दिरापुरम, गाजियाबाद		200/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

कुमारी गरिमा जी, बी–2 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री दीपक जी,		501/–
श्रीमती सुकान्ती गुप्ता जी, सी–ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली		550/–
श्री हरीश आर्य जी, जी–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली	दान+शुल्क	500/–
श्रीमती सुकान्ती गुप्ता जी, सी–ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
डा. पुष्पलता वर्मा जी, प्रधान आर्य समाज, बाहरी रिंग रोड़ विकासपुरी	आजीवन	300/–
श्री मिडहा जी फैमिली, जे.जे.–1, विकासपुरी, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
श्री दीपक महाजन जी, सैक्टर–12, द्वारका, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
श्री जे.के. चढडा जी, एफ–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली	दान+शुल्क	151/–
श्री सौरभ चौधरी जी, जी–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली	दान+शुल्क	100/–
श्री हरदिल जी, जी–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली	दान+शुल्क	100/–
मै. कटारिया क्लाथ हाउस, एच.ब्लाक मार्केट, विकासपुरी		50/–
श्री डी.डी. शर्मा जी, एच.–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्री एस.पी. शर्मा जी, एच.–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
डा. रमा शर्मा जी, एच.–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्री सुधीर पाहुजा जी, आनन्द कुंज, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–

श्रीमती सावित्री शर्मा जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती विमला चोपड़ा जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		800/–
श्रीमती उमा बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		500/–
श्रीमती सुनीता सहगल जी, पत्नी श्री अशोक सहगल जी, प्र.आ.स. राजेन्द्र नगर		500/–
श्रीमती विमला चोपड़ा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	आजीवन सदस्य	300/–
श्री भीष्मलाल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		200/–
श्रीमती सुदर्शन ग्रोवर जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर दिल्ली		200/–
श्रीमती सुदर्शन राय जी, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली		200/–
श्रीमती कृष्णा आहूजा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती तारा ढींगरा जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		100/–
सुश्री शांति मदान जी, डबल स्टोरी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		100/–

श्री देवराज अरोड़ा जी (फरीदाबाद) द्वारा एकत्रित दान

श्री मदन तनेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद	त्रैमासिक	675/–
श्री देवराज अरोड़ा जी, सै. –16 फरीदाबाद		325/–
श्री संजय अरोड़ा जी, सै. –16 फरीदाबाद		250/–
श्री अजय अरोड़ा जी, सै. –16 फरीदाबाद		250/–
श्री मदन छाबड़ा जी, मालवीय नगर, नई दिल्ली		300/–
श्री वेद प्रकाश जी, रोहिणी, नई दिल्ली		300/–
श्री सुभाष अरोड़ा जी, सै. – 16 फरीदाबाद		225/–
श्री अनिल गुप्ता जी, सै. – 16 फरीदाबाद		225/–
श्री कृष्णलाल टुटेजा जी, सै. – 16 फरीदाबाद		150/–
श्री सुरेश जी, भारत आप्टीकल्ज, फरीदाबाद		150/–
श्री पवन अग्रवाल जी, ओमैक्स इडिट्स फरीदाबाद		150

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-5-2015 Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060 5 7
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

मई – 2015

"सत्यार्थ प्रकाश दिग्दर्शन"

– कविराज श्री रघुनन्दन सिंह "निर्मल"

सच तो यह है वेद का है सार "सत्यार्थ प्रकाश"।
ज्ञान और विद्या का है भंडार "सत्यार्थ प्रकाश"।।
कर रहा है सत्य का विस्तार 'सत्यार्थ प्रकाश"।
रोकता है झूठ का प्रचार "सत्यार्थ प्रकाश"।।
मूर्ख भी विद्वान् हो जाते हैं इसको बांच कर।
एक एक अक्षर में इस पुस्तक के हैं ऐसा असर।।

प्रथम समुल्लासः-

"ओ३म्" हो परमात्मा का नाम है सब से बड़ा।
सबका रक्षक है वही स्वामी है कुल ब्रह्माण्ड का।।
इसको जपकर मोक्षपद कितने ही ऋषियों को मिला।
पहले अध्याय में की स्वामी ने इसकी व्याख्या।।
और भी हैं नाम उसके किन्तु यह निज नाम है।
इससे ही आरम्भ होता है जो उत्तम काम है।।2।।
उसके गुण और कर्म के आधार पर हैं उसके नाम।
सर्वशक्तिमान है वह और है आनन्दधाम ।।
जानता है जो उसे होता है वह भी पूर्णकाम।
शान्ति मिलती है मिट जाते हैं दुख उसके तमाम।।
इसमें निर्गुण और सगुण रूपों का वर्णन देखिये।
और भी जो नाम हैं उनका विरूपण देखिये।।3।
इन्द्र विष्णु और ब्रह्मा सब उसी के नाम हैं।
ईश्वर के गुण हजारों हैं हजारों काम हैं।।
सबमें व्यापक है वही सारे उसी के धाम हैं।
ज्ञान अर्थों का न होने के बुरे परिणाम है।।
सत्य के पालन का ही है नाम मंगल–आचरन।
"ओ३म्" और "अथ" शब्द से था ग्रन्थ लिखने का चलन।।4।।

द्वितीय समुल्लासः-

दूसरे अध्याय में बच्चों को शिक्षा का है ज्ञान ।
देश का कल्याण जो चाहो तो तुम दो इस पे ध्यान।।
भूत प्रेतों से किया स्वामी ने इसमें सावधान।
बचता है पाखंडियों से जो इसे लेता है जान।।
जो फलित ज्योतिष है वह सब धूर्तों की चाल है।
जन्मपत्री क्या है इक पाखंडियों का जाल है।।5।।
इसमें स्वामी ने बताई शील और शिक्षा की रीत ।
जानता है जो इसे संसार में है उसकी जीत।।
वैर करना छोड़ कर सब से करो तुम जग में प्रीत।
अच्छ ग्रन्थों को पढ़ो गाओ सदा वेदों के गीत।।
काम क्रोध–और ईर्ष्या आलस्य और कृतघ्नता ।
बालकों की इनसे करनी चाहिये रक्षा सदा ।।6।।

तृतीय समुल्लास :-

तीसरे अध्याय में पढ़ने पढ़ाने का है ढंग ।
देखकर इसका विषय योरूप के हैं विद्वान् दंग ।।
इसमें स्वामी ने बताये हैं सभी शिक्षा के रंग ।
व्याकरण क्या उपनिषद् क्या और क्या वेदों के अंग।।
क्या विषय विद्यार्थी को कैसे पढना चाहिये।
किस तरह से ज्ञान की सीढ़ी पे चढ़ना चाहिये।।7।।
इसमें 'गायत्री' के अर्थों का दिया स्वामी ने सार।
जानने से जिसको मिट जाते हैं सब मन के विकार ।।
वेद को पढ़ सकते हैं सारे ही जन इच्छानुसार ।
स्त्री और शूद्र भी होते हैं भवसागर के पार ।।
वह बताये ग्रन्थ जिनका त्याग करना चाहिये।
विष मिले भोजन की भाँति जिनसे डरना चाहिये।।8।।
आठ साधन जिनसे होती है परीक्षा सत्य की ।
जानते जिसको चले आये हैं सारे ही ऋषि।।
महर्षि "गौतम" की है जो देन दुनिया को बड़ी ।
इनके ऊपर स्वामी ने डाली है पूरी रोशनी ।
जो पढ़ेगा इसको वह भी तार्किक हो जायेगा ।
सामने जो आयेगा उसके वह मुँह की खायेगा ।।9।।

चतुर्थ समुल्लास :-

चौथे अध्याय में स्वामी ने दिया गृहस्थ धर्म।
यह बताया है कि क्या क्या हैं पती पत्नी के कर्म।।
खोलकर इसमें बताये हैं सभी ब्याहों के मर्म।
बालपन के व्याह को इसमें कहा है नीच कर्म।।
जो चली आती है भारत में स्वयंवद की प्रथा।
सबसे उत्तम है वही इसमें ये स्वामी ने लिखा ।।10।।
वर्ण का आधार होता है सदा गुण कर्म पर ।
मानते हैं जन्म से जो इसको हैं वह मूढ़ नर ।।
चारों वर्णों के बताये धर्म इसमें खोलकर ।
संस्कारों को करो अपना भला चाहो अगर ।।
पाँच यज्ञों का भी वर्णन इसमें स्वामी ने किया ।
करता है जो भी इन्हें बन जाता है वह देवता ।।11।।
धर्म की महिमा बताई इसमें और पापों का फल ।
जानता है जो इन्हें दुख उसके सब जाते हैं टल ।।
धर्म का संचय करो संसार में एक एक पल ।
साथ देता है यही जब प्राण जाते हैं निकल ।।
है वह आपद्–धर्म कहते हैं ऋषि जिसको नियोग।
करते हैं शंकायें जो इसपर वह हैं अनभिज्ञ लोग ।।12।।

पंचम समुल्लासः-

पाँचवें अध्याय में स्वामी ने क्या–क्या कुछ दिया।
वानप्रस्थी और संन्यासी के कर्मों को लिखा ।।
किसको है संन्यास का अधिकार यह भी है कहा।
यह बताया राजा से विद्वान् का पद है बड़ा।।
जो "मनु" ने धर्म चर्या लिखी है संन्यास की।
खोलकर इसमें बताई है वह स्वामी ने सभी।।13।।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री